कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा युवाओं हेतु बकरी पालन विषय पर क्षमता विकास कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र, बरेली द्वारा मत्स्य, पशु पालनएवं डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार की परियोजना " लाभकारी डेयरी फार्मिंग और पशुधन प्रबंधन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से किसानों का क्षमता विकास कार्यक्रम के अंतर्गत "बकरी पालन" विषय पर दिनांक 13 मार्च 2022 से 15 मार्च 2022 तक तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम का शुभारंभ कर डॉ. बी पी सिंह, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र ने बताया की बकरी एक बहुउपयोगी पशु है जिससे मांस के अलावा दूध, खाल एवं खाद का उत्पादन प्राप्त किया जाता है। उन्होंने साधनोें के अभाव मंे छोटे , सीमांत कृषक एवं ग्रामीण युवा दुधारू पशुओं के बजाय कम लागत में बकरी पालन अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकते है तथा स्वरोजगार प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन सकते है। उन्होंने यह भी बताया की कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा प्रगतिशील किसानांे, उद्यमियों, शिक्षित बेरोजगार युवाओं को व्यावसायिक बकरी पालन के साथ जोड़ने का काम किया जा रहा है।

इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मे संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को बकरियों की प्रमुख नस्लों एवं उच्च गुणों वाली बकरी का चुनाव, कम लागत मे बकरी हेतु आवास का निर्माण, बकरियों मे प्रजनन प्रबंधन, बकरी की विभिन्न शारीरिक अवस्थाओ पर पोषण प्रबंधन, मादा बकरियों की प्रसव पूर्व एवं पश्चात देखभाल, मेमनों की देखभाल, बकरियांे के प्रमुख रोग एवं निदान, बकरी फार्म पर रखे जाने वाले आवश्यक रिकॉर्ड और बकरी पालन को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओ के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षणार्थियों ने वैज्ञानिकों के साथ बकरी पालन से संबंधित समस्याओं पर भी विस्तृत चर्चा की तथा उनका समाधान भी जाना।   प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कृषको ने कृषि विज्ञान केंद्र के प्रदर्शन फार्म का भ्रमण कर कृषि से जुड़ी नई तकनीकियों की भी जानकारी ली। इस प्रशिक्षण में केन्द्रिय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम मथूरा के वैज्ञानिकों डा. अनुपम कृष्ण दीक्षित एवं डा. मनोज कुमार सिंह द्वारा भी व्याखान दिये गये, जिनकों प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सराहना की गई। समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. महेश चन्द्र विभागाध्यक्ष, प्रसार शिक्षा द्वारा की गयी, उन्होंने बताया कि बकरी पालन मुख्यतः महिलाओं द्वारा परिवार के जीविकापार्जन हेतु किया जाता है तथा आज के परिवेश में युवाओं द्वारा भी बकरी पालन व्यवसाय में काफी रूचि ली जा रही है जो बकरी पालन के अत्यधिक लाभ को इंगित करता है।

प्रशिक्षण के समापन समारोह में प्रशिक्षणार्थियों का फीडबैक भी लिया गया जाना और उन्हे आगे भी कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़े रहने की सलाह दी। कार्यक्रम मे प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण पूर्व तथा प्रशिक्षण उपरांत भी मूल्यांकन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम मे दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के बरेली, कन्नौज, कानपुर, लखनऊ, गाजियाबाद , मुरादाबाद, बदॉयू आदि जनपदों के 52 कृषको एवं युवाओ (51 पुरुष और एक महिला) ने सहभागिता दर्ज की।

मत्स्य,पशु पालन एवं डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार
द्वारा
किसानों की क्षमता निर्माण हेतु
लाभकारी डेयरी फार्मिंग और पशुधन प्रबंधन के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम
बकरी पालन
13–15 मार्च, 2022
कृषि विज्ञान केन्द्र
भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
NABARD
CC Scheme – Worki
Capital for Animal
usbandry and Fisher
ARD, Bareilly
Taking Rural India >> For

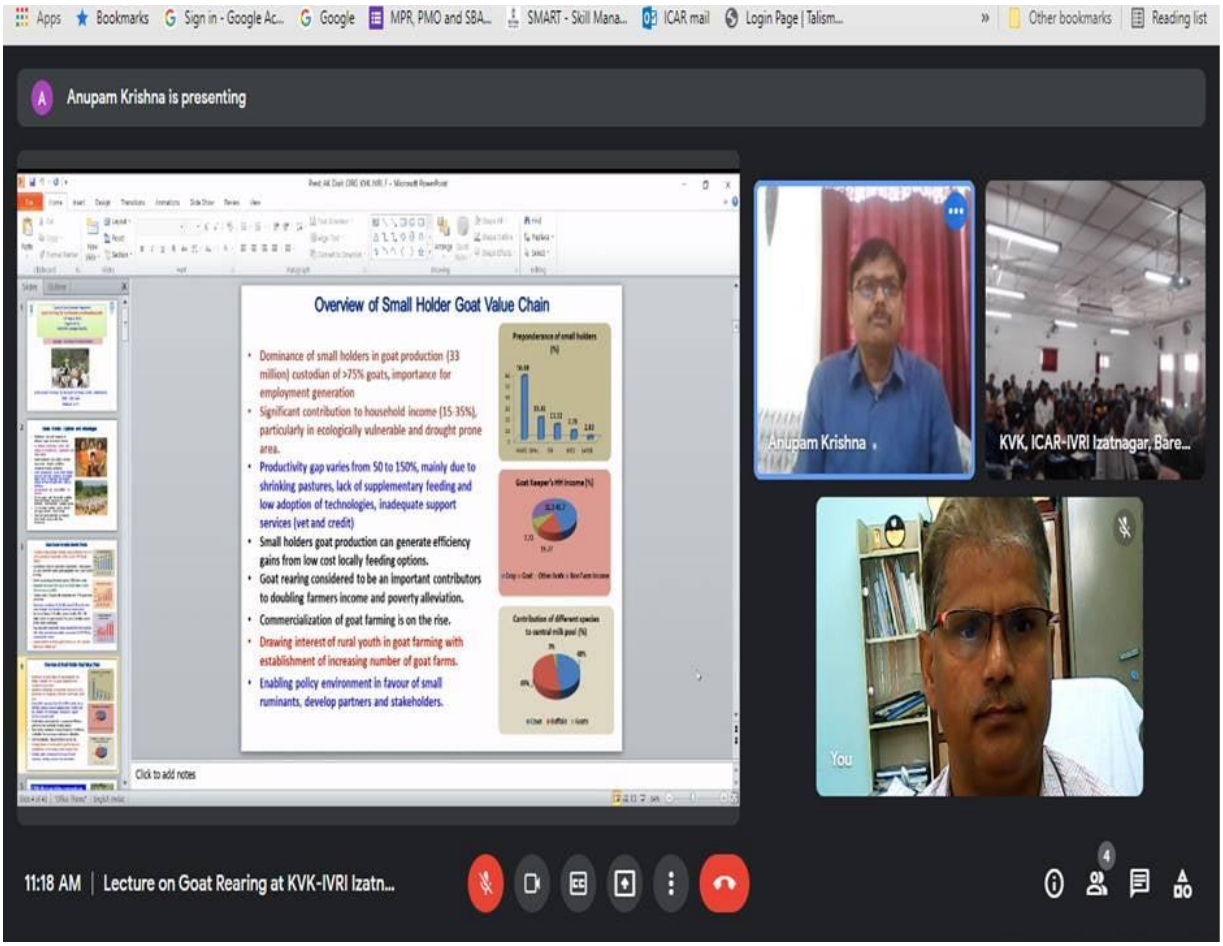
Apps
Bookmarks
Sign in - Google Ac...
Google
MPR, PMO and SBA...
SMART - Skill Mana...
ICAR mail
Login Page | Talism...
Other bookmarks
Reading list
Anupam Krishna is presenting
Overview of Small Holder Goat Value Chain
Dominance of small holders in goat production (33 million) custodian of >75% goats, importance for employment generation
Significant contribution to household income (15-35%), particularly in ecologically vulnerable and drought prone area.
Productivity gap varies from 50 to 150%, mainly due to shrinking pastures, lack of supplementary feeding and low adoption of technologies, inadequate support services (vet and credit)
Small holders goat production can generate efficiency gains from low cost locally feeding options.
Goat rearing considered to be an important contributors to doubling farmers income and poverty alleviation.
Commercialization of goat farming is on the rise.
Drawing interest of rural youth in goat farming with establishment of increasing number of goat farms.
Enabling policy environment in favour of small ruminants, develop partners and stakeholders.
Click to add notes
Anupam Krishna
KVK, ICAR-IVRI Izatnagar, Bare...
You
11:18 AM | Lecture on Goat Rearing at KVK-IVRI Izatn...